(2) देव की कहानी

हरीश कुमार और उनकी पत्नी शांति देवी पिछले लंबे समय से किराये के मकान में रूद्रपुर में रहते थे। दोनों सिडकुल रूद्रपुर जनपद ऊधमसिंहनगर में नौकरी करते थे। सितंबर 2013 की सुबह शांति देवी ड्यूटी पर गयी थी। उनका चार साल का बेटा देव पिता हरीश के साथ घर पर था। सुबह के समय हरीश बेटे को लेकर घर के पास बाहर घूमने निकल गए व एक दुकान में अखबार पढ़ रहे थे। इसी दौरान देव कहीं निकल गया। पिता हरीश कुमार और वहां स्थित लोगों ने देव की काफी तलाश की लेकिन कोई पता नही लगा। पिता ने इसी दिन ट्रांजिट कैंप चैकी रूद्रपुर में देव की गुमशुदगी दर्ज कराई।

ऑपरेशन स्माइल टीम द्वारा बताया गया कि यह बच्चा 10 सितंबर 2013 की शाम काठगोदाम रेलवे स्टेशन में जीआरपी के जवानों को भटकता हुआ मिला। प्रशासन ने इसे चाइल्ड लाइन सेंटर की देखरेख में सौंप दिया। प्रशासन के आदेश पर देव को 16 सितंबर 2013 में अल्मोड़ा के बख में स्थित राजकीय शिशु सदन लाया गया। तब से बच्चा यहीं पल रहा था।

ऑपरेशन स्माइल के तहत टीम प्रभारी गोविंद भट्ट और और उनके टीम सदस्यों ने बच्चे के परिजनों का पता लगाने के लिए शिशु सदन में रह रहे बच्चे की फोटो ऑपरेशन स्माइल के तहत बनाये गए व्हटसअप ग्रुप में जनपद में स्थित सभी टीम प्रभारियों को भेजी। इसके चलते ही रूद्रपुर पुलिस लापता देव के परिजनों को खोज पाई। शांति देवी ने ऑपरेशन स्माईल टीम को बताया कि उनके बेटे के सिर में बांयी तरफ जले का निशान है, स्माईल टीम द्वारा बच्चे के सिर पर निशान देखकर उसके देव होने की पुष्टी की तथा उसके परिवारजन को सुपुर्द किया।